माहीफ़िल

प्रा. रंजनादेवी पाटील

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Prof. Ranjanadevi Patil 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-811-4

Cover Design: Shivam Gaur
Typesetting: Sagar

First Edition: January 2026

न किसी की जुबानी है न पर्शियानी है
गज़ल सिलसिला-ए-जिंदगानी है

मेरी पुत्री प्रा. मधुमीता, डॉ. सोनिया, पुत्रवधू सौ. अमृता और पोती रूद्रा तथा पुत्र श्री. रोहन, दामाद श्री. राजेन्द्र, पोता राजवीर और नाती युगंधर इन्हें अर्पण करती हूँ।

अनुक्रमणिका

१. उल्फ़त 1
२. निगाह-ए-उल्फ़त 2
३. सैलाब-ए-मोहब्बत 3
४. बेख़ुदी 4
५. मुलाकात 5
६. जाग उठी फुलवारी 6
७. तन्हाई 7
८. बहारें खार छोड़ जाते हैं 8
९. मेरे उजड़े दयार में 9
१०. अश्क 10
११. परछाई 11
१२. राहे फ़ना 12
१३. पतझड़ 13
१४. गुलसितां 14
१५. फिर एक बार 15
१६. शब की दास्तां 16
१७. भूल न जाना चमन 18
१८. तेरे जाने से 20
१९. मेरा प्यार 21
२०. आशिकी 22
२१. रस्म-ओ-रिवाज़ 23
२२. मयखाना 24
२३. घर का रास्ता भूल गया है 25

२४. दिल नहीं लगता 26
२५. गुलिस्तां 27
२६. तेरी यादें 28
२७. तेरा साया 29
२८. सूना आसमां 30
२९. रातों के साये 31
३०. जलकण की दास्तां 32
३१. मेरी कहानी 34
३२. घूँघटवाली 35
३३. कठपुतली 36
३४. पतिव्रता 37
३५. गंगा मैया 39
३६. काश ! मैं पेड़ होती 40
३७. कनवास 41
३८. मोम जल रही है 42
३९. मेरी हस्ती 43
४०. आखिर क्यों 44
४१. गम 45
४२. मेरी रात 46
४३. जुगनू 47
४४. महफ़िल 49

१. उल्फ़त

आजकल वो हर रोज़ मेरे दयार से गुज़रते हैं
जाने क्या बात ज़ेहन में रखते हैं।
शायद ये मेरे मासूम जलवों का मआल हों
वरना क्यों वो बेताबी से चक्कर काटते हैं।
वैसे हमें कोई हमदर्दी नहीं उस राह-रौ से
यूं ही नक्श–ए–खयाले उल्फ़त का मज़ा लेते हैं।
बेवजह दरीचे से ज़रा सा झाँककर क्या देखा
मोहल्ले वाले क्या-क्या तल्ख़ बातें करते हैं।
रफ्ता-रफ्ता ये बात फ़ैल जायेगी शहर में
बेकार हम हवादिस में फँस गये हैं।
जाने क्या बात वो जेहन में रखते हैं।
जो आजकल रोज़ मेरे दयार से गुज़रते हैं।

२. निगाह-ए-उल्फ़त

एक निगाह-ए-उल्फ़त को आज़माना है
ख़ुद अपने जिगर को आज़माना है।
जल उठी है शम्मा महफ़िल में अभी
एक आतिश-परस्त को आज़माना है।
आलम-ए-तारीकी में दमक रहा है कोई
तजल्ली-ए-शफ़क को आज़माना है।
वो मुक़द्दर ही नहीं फ़कत जिस्त है मेरी
जुस्तजू-ए-जिस्त को आज़माना है।
हर गुस्ताखी मुआफ़ है उन्हें
इस दिल की आरजू को आज़माना है।

३. सैलाब-ए-मोहब्बत

अपना गिरेबां सँभालू कैसे
सफ़र-ए-शौक़ पर चलूँ कैसे
कहाँ से ये बिमारी आयी
राज़-ए-दिल खोलूँ कैसे।
अभी तो वो गैर है
दीदार की बात करूँ कैसे
चुप रहके भी न बनती है
ज़ुबा को भी खोलूँ कैसे।
आख़िर फ़ासले कब मिटेंगे
नक़ाब को हटाऊँ कैसे
कहीं मुझे वो मुहमिल ना समझे
उनकी आरजू पर मिटूँ कैसे।
फस्ल-ए-बहार गुज़र रही है
सैलाब-ए-मोहब्बत रोकूँ कैसे
अपना गिरेबां सँभालू कैसे
सफ़र-ए-शौक़ पर चलूँ कैसे।

४. बेख़ुदी

वो ज़माना खुशियों का लूट गया है
कोई मेरे दिल को लूट गया है।
आँखों में हया, अदा में नजाकत
लड़कपन का जमाल लूट गया है।
पासबाँ–ए–अक्ल महफूज़ रखें कहाँ तक
अंदेशा–ए–तूफ़ान क़रार लूट गया है।
ये कैसी तबदीली है मेरे अहले चमन में
गुलचीं से क्या शिकायत बागबाँ लूट गया है।
वहशत–ए–गुलअफ्शानी पामाल कर गया है
बेख़ुदी में ये सबा महक लूट गया है।
कोई मेरे दिल को लूट गया है
वो ज़माना खुशियों का लूट गया है।

५. मुलाकात

हुई थी मुलाकात किसी नज़र से
कि इनायत हो गयी थी खुदा से।
इकरार-ए-मोहब्बत में अफ़सुर्दा हो गये
कि आँख थी लड़ी कज़ा से।
बेख़ुदी का आलम रूसवाँ कर गया
क्या खौफ़ था कोई होशो–हवासों से।
बिहिश्त की तलब में बेहाल हो गये
क्या दुश्मनी थी कोई इस जहां से।
साहिल के आस-पास नाख़ुदा डगमगाये
क्या नहीं था यकीं मँझधार से।
दवा ने कुछ ना काम किया
कैसी अजीब थी दोस्ती इस ज़हर से।

६. जाग उठी फ़ुलवारी

खुली आँखों में नींद की बेचैनी
जाग रही है
करवट बदल- बदल कर
बेताबी जाग रही है।
लोरियाँ सुनकर मीठे सपनों में
सितारें सो गये
आफ़ताब की यादों में
रात की ख़ामोशी जाग रही है।
लहर-लहर पर मस्ती छाई
बेख़ुदी आयी धरा पर
पहरा करते इन मौजों पर
चाँदनी जाग रही है।
ग़ज़ल सुना के राग छेड़ के
साज़ चुप हो गया
हलके-हलके धुन की लहरें
कोनें में जाग रही है।
गुनगुनाती हवा जुनून -ए-इश्क में
फ़ाका-मस्ती कर गई
फ़िज़ा में जो महक लहराई
फुलवारी जाग उठी है।

७. तन्हाई

चाँद वही, सितारे वही
है समां अब भी हसीन
फिर वही रंग ले आया
ये शाम का नज़ारा रंगीन।
हर जगह ढूँढती हैं तुम्हें
निगाहें खोई हुई
रूह पुकारती है तुम्हें
यादों के साये में लिपटी हुई।
याद आयी जैसे पतझड़ में सावन
सहरा में ठंडी लहर
तन्हाई तो अपनी है
मुश्किल है निभाना प्यार अगर।
गम-ए-जुदाई अब क्या
जब यादों में बसे हों
तन्हाई से भी प्यार है
अब हर पल साथ होते हो।

८. बहारें खार छोड़ जाते हैं

इस उपवन में यादों के पंछी
कैसी बहार खोज रहे हैं
कोई इन्हें समझाओं
बहारें आखिर खार ही छोड़ जाते हैं
हर शय की अपनी कहानी है
हर पल की अपनी रवानी है
जो बीत गया वो बीत गया
कुछ पल बस निशानी छोड़ जाते हैं।

९. मेरे उजड़े दयार में

मेरे उजड़े दयार में आफ़ताब भी आते हैं
सर्द सूनी रातों में माहताब भी आते हैं।
बहुत अश्क बहाया था बादे-बहारों में
दश्त से गुज़र रहे गो ख़्वाब भी आते हैं।
कितने शिक़स्त हुए हर एक राहगुज़र पर
मरहम के साथ- साथ गम भी आते हैं।
उमर भर गुज़ारा किया उधार की दुवाओं से
शामे-ज़िन्दगी फिर भी उनके ख़याल आते हैं।

१०. अश्क

आये कुछ अश्क कुछ याद आये
जिन्हें भुलाना चाहा वो याद आये।
कर रहा था बुलबुल पुकारा बहारों को
खिज़ा में अजब सैयाद याद आये।
ख़ारजारों में घायल गुलसितां सिसक रहा है
नक़्शे-पा-ए-गुलचीं कुछ याद आये।
मयस्सर हुई हक़ीकत में सूरते-विराना
ओ सावन के झुले कुछ याद आये।
ये किस तड़प में अयाँ करे फ़लक
ओ रूठे हुए बादल कुछ याद आये।
जाती हुई साँस को किसने रोक दिया
वक्ते -मर्ग हर्फ़ वफ़ा के कुछ याद आये।
ख़ुगर हो गये सराबे-उल्फ़त से
वाइज़ के वो दावे कुछ याद आये।
कुछ अश्क आये कुछ याद आये
जिन्हें भुलाना चाहा वो याद आये।

११. परछाई

कभी अपनी परछाई
गुम हुई सी महसूस हो
तो मेरी तरफ देखना
और पूछना
कैसे हो?
ये खुशकिस्मती
के लोग नहीं जानते
मेरा वजूद
वर्ना छीन लेते मुझसे
ओ सुकून, ओ बेख़ुदी
और कहते कि
मुझे निज़ात मिली।

१२. राहे फ़ना

ज़िंदगी की सहर में शबे-गम कोई न था
राहे-फ़ना धूप में गुज़री ग़मगुसार कोई न था।
मेरे लिए साहिल पर हर आदमी ख़ुदा था
कश्ती जब डूबने लगी नाख़ुदा कोई न था।
उमर भर दुश्नाम मिले मुफ़्त में हर गली में
चार-सू देखा दुआ देनेवाला कोई न था।
आँखों में बसाया था इल्म की रोशनी को
तारीकी-ए-इश्क में मगर सितारा कोई न था।
रकिबों को ठिकाने लगाते - लगाते दम उखड़ गया
साँस लेने बैठे तो हमसाया कोई न था।
ज़िंदगी के सिलसिले पर रोनेवाले कितने थे
मय्यत उठी तो रोनेवाला कोई न था।
इस शहर का ज़र्रा- ज़र्रा मुझे कितना अजीज़ था
कफ़न पर गुब्बार के नाम धब्बा कोई न था।

१३. पतझड़

बहती है ज़ख्म बहने दो
होती है रूसवाई होने दो
जितनी कलियाँ खिलनी थी खिलं गई
अब पतझड़ को आना है, आने दो।
पंछी चहक रहे हैं डाल-डाल पर
उन्हें प्यार का गीत गाने दो
कौन जाने कब शाम होगी
दो पल ज़िंदगी के
प्यार में गुज़ारने दो।
मैंने बहुत कुछ माँगा ज़िंदगी से
जो मिल गया
वो ही जतन कर रखने दो ।
कब मिली है किसी को
महफ़िल सितारों की
जुगुनू मेरे संग है
राह पर चलने दो।
अब किसी से गिला नहीं
न ही कोई तमन्ना है
जों ज़ख्म थे
उन्हें दफ़ना कर रखने दो
जितनी कलियाँ खिलनी थी
खिलं गयी
अब पतझड़ को आना है
आने दो।

१४. गुलसितां

एक ज़माना हुआ
फूलों को खिलते हुए
अब भी महक बिखेर रही है
इस गुलसितां में।
बाराँ ज़रा रुको तो
मत बरसो अभी
छोड़ गया है कोई नक़्शे–कदम
इस गुलसितां में।
ऐ बादल
ज़रा हटाओ तो अपना साया
ढूँढ रही हूँ मैं
गुज़रा हुआ कल
इस गुलसितां में।
ऐ बर्क ज़रा धीरे से चमकना
कई सपने सो रहे हैं
इस गुलसितां में।
बाराँ ज़रा रुको तो
मत बरसों अभी
भूल गया है कोई अपना हमदम
इस गुलसितां में ।

१५. फिर एक बार

फिर एक बार पुकारो हमें
फिर एक बार उठा लो हमें
ये जो इश्क का सिलसिला है
फिर एक बार रूलाओ हमें।
हसरत के चिराग जल रहे हैं
सूनी महफ़िल धड़क रही है
पाज़ेब मेरी थिरक रही है
कोई साज़ छेड़ के बुलाओ हमें।
ये फ़िज़ाएं बुला रही हैं
गुलशन मेरा सिसक रहा है
चलो फिर उसी वादी में
प्यार का गीत सुनाओ हमें।
हम- में आप में जो बीती कल
क्या करते हो हिसाब आज
यहां अब कोई मक़ाम नहीं
हश्र में साथ ले जाओ हमें।
फिर एक बार पुकारो हमें
फिर एक बार उठा लो हमें
ये जो इश्क का सिलसिला है
फिर एक बार रूलाओ हमें।

१६. शब की दास्तां

ज़िन्दगी के सहर में वो आये
शरम से पलकें झुकी
पेशानी पर लालिमा छाई
फ़ाका-मस्ती में नक़ाब गिर गया
खुर्शिद ने अपना जाल बिछाया।
ये क्या गज़ब हुआ
खुले आम शब ने उसे अपना लिया
अपनी हस्ती भूलकर
पुरन्नुम हो गयी
आफ़ताब की बाहों में समा गयी।
वो गम के अंधेरे जाईल हुए
लाखों तरन्नुम, हजारों फूल खिलें
सुबह का भूला
शाम होते ही लौट गया
शफ़क की बाहों में समा गया।
और अंधेरा घना हुआ
शब से ना जब्त हुआ
जफ़ा का दर्द
हद से गुज़र गया।
वह बहुत खफ़ा हुई
अपने आप में सिमट गयी
दिले-मरहूम लेकर
काले लिबास में लपेट गयी।
वो उजाले, वो बहारें कहाँ गईं?
ठंडी-ठंडी आहें भरकर
सिसकियाँ लेती रही

खल्वत में फिर उसे
वो नज़ारे याद आये
वो बीते हुए पल याद आये।
हक़ीकत जानकर
ज़फा ज़ब्त कर गयी
उम्मीद के सितारें
आँचल में भरकर
बेताबी से राह देखती रही।
सहर होते-होते
वह थक गयी
बहुत थक गयी
गहरे दुख से आँखों से
शबनम की बरसात हुई।

१७. भूल न जाना चमन

अतीत के साये में
हँस-हँस के गुज़रना
भूल ना जाना चमन
नये गुल खिलाना।
कितने सावन आये-गये
रंग गंध के मेल हुए
भँवरें मस्ती में झूम गये
उन यादों में शाद रहना
भूल ना जाना चमन
नये गुल खिलाना।
कितने बादल मँडरा गये
बर्क ने क्या-क्या सितम किये
कलियों का दम टूट गया
फिर भी हौसले बुलंद रखना
भूल ना जाना चमन
नये गुल खिलाना।
चांह भँवरों की मुरझायी
पतझड़ ने बोली लगा दी
कितने अत्याचार हुए पर
गिला कभी ना करना
भूल ना जाना चमन
नये गुल खिलाना।
गुलचीं से ना करो शिकायत
शबनम से सीखो ज़रा इनायत
फूल अगर मुरझा भी गये तो
गम से तुम ना रोना

भूल ना जाना चमन
नये गुल खिलाना।
आनेवाले बहार के लिए
सदा मुस्कुराते रहना
भूल ना जाना चमन
नये गुल खिलाना।

१८. तेरे जाने से

तेरे जाने से ज़िन्दगी में
नूर रहा ही कहाँ है
इस विरानें में घुटने के लिए
दम रहा ही कहाँ है।
सुनसान राहें , बुझे-बुझे चिराग
बेमतलब तांक राहे हैं
मंजिल से जुदा होकर
अब मुझे जाना ही कहाँ है ?
इन सितारों में अब वो
खाबनाक अफ़सू नहीं रही
जिसमें तुम नहीं
उन ख्वाबों में मजा ही कहाँ हैं ?
तमाम राते अब नाशाद गुज़रेगी
कोई तड़प नहीं होगी
तुम्हारे दीदार की हसीन घड़ी की
सदा ही कहाँ है ?
तुम साथ थे तब
जुदाई का ख़याल गमनाक था
इतने पराये हुए
अब गम से वास्ता ही कहाँ है ?

सहर होगी शाम होगी
रोज़गारी चलती ही रहेगी
दिल धड़कता है अभी
मौत का भरोसा भी कहाँ है ?

१९. मेरा प्यार

मेरा प्यार चाँद और सितारों की
हद पार कर गया है
फूलों ने मेरे उपहार पहने हैं
काटों को मैंने दर्द बाँटे हैं
जो फूलों की झुरमुट से झाँक कर
मुझे बधाई देते हैं।
आप जब कभी फूलों की तरफ
हाथ बढ़ाओगे
तब काटों की तरफ भी
एक नज़र डाल दो
और महसूस करो
कोई आपसे
बेहद प्यार करता है।

२०. आशिकी

आशिकी का क्या भरोसा?
मौसम बदलने में देर नहीं लगती।
गुब्बारे उठे तो क्या ?
मौसम बदलने में देर नहीं लगती।
चाँदनी रूलाती है
सबा घायल करती है
चाँद के निकलते ही
समां बदलने में देर नहीं लगती।
तूफ़ान उठते हैं
तपिश जलाती है
प्यार का मौसम लौटकर आने में
देर नहीं लगती।

२१. रस्म-ओ-रिवाज़

रस्मों-रिवाज़ों के झूठे झगड़े
कब तक चलते रहेंगे?
जो भी साँसे हक़ में हैं
क्या ऐसे ही खो जायेंगे?
ज़िन्दगी का आशियाना
यूं तड़पता रह जायेगा
मौत की आगोश में भी
ये ना चैन पायेगा।
कहाँ गये वो लोग?
जिन्हें प्यार से मतलब था
कहाँ गये वो रंगीन मेले?
जिनसे रोशन ये जहां था
भटक गये हैं सब यहां पर
टकरा कर नफ़रत की दीवार से
नादानी इस हद तक बढ़ी है
शहर में जैसे आग लगी है।
प्यार वफ़ा भाईचारा
नारे थे बस नारे ही हैं
इस्पात की इन ज़ंजीरों को
जैसे मोम पिघला रहा है।
नए लिबास में हर फ़रिश्ता
नया स्वाँग रचाता है
ख़ुदा जाने इस शहर का
अंजाम क्या होने वाला है?

२२. मयखाना

महफ़िल-ए-ज़िंदगी
मयखाना भरा हुआ है
सुबह से शाम तक
दौर चला रहा है
सब हैं नशे में
घर का खयाल कौन करता है?
कितने आए कितने गये
और भी कितने आयेंगे
पीकर जो चले गये
उन्हें याद कौन करता है?
हैं सब की हाथों में प्याले जाम के
कौन किसे सँवारे?
पीकर जो लड़खड़ाए
उन्हें उठानेवाले हाथ कहाँ हैं ?
जाम टकराते हैं
होश-हवास गवाँते हैं
और जो भी होश में हैं
उसे नशे का लालच है।
अगर इतना ही है काम
यही है रूप जिंदगी का
क्या हक़ है मुझे
नशे पर पाबंदी लगाने का?
ऐ साकी
मुझे भी पीने दे इस मयखाने से
मैं ही क्यों रहूँ
अजनबी इस माहौल से?

२३. घर का रास्ता भूल गया है

इतनी पिला दी तूने साकी
कि घर का रास्ता भूल गया है ।
यहीं तेरी चौखट पे गुज़ारा करने दे
कि घर का रास्ता भूल गया है।
ये हसीन रात है साकी
तेरी हाथों से और पीला दे जाम
तेरे पास मय है , मुझे चाहत है
बेहोश होकर अगर गिर भी जाऊँ
तो यूं न ठुकरा कर बाहर निकाल।
इस चाहत का नाम क्या है
इस चाहत का मकाम क्या है
कैसे हैं ये फ़िजूल सवाल
हल हुए तो केवल मलाल।
नशे में झूमने दे यहीं पर साकी
क्या पता सहर कहाँ होगी?
कर लेना ज़रा सी मेहमाननवाजी
कि भूल गया है रास्ता घर का
एक अजनबी।

२४. दिल नहीं लगता

मयकदे से आये हैं अभी
बुतखाने में दिल नहीं लगता
अभी उम्र क्या है?
सिजदे में दिल नहीं लगता।
चार-सू इन्सान के दिलों में
पत्थर देखे हैं
बुत पर सुबुक-तर फूल चढ़ाने
दिल नहीं लगता।
हिर्सो-हवाने उठाये खंजर
खिलते हुए गुलसितां पर
फूलों को मौत आयी
शबनम में दिल नहीं लगता।
अज़दाद ने बजा फ़रमाया था
घर का बँटवारा मत करो
नफ़रत की आँधी में गिरते हुए
दीवारों में दिल नहीं लगता।
हज़ारों शमशीरे जाबिर
चमक उठी हैं फ़लक पर
ज़मीं पर रिसते हुए
बेपनाह खून में दिल नहीं लगता।
रसूल की नज़र से तो दुनिया
ख़ुदा का सरशार ख़्वाब है
तारीकी-ए-ईमान से मगर
राहे-ख़ुदा में दिल नहीं लगता।
ख़ुदा भी शायद बिस्मील है
पैकर-ए-तखरीब देखकर
कौन है अब ग़म-गुसार
सिजदे में दिल नहीं लगता।

२५. गुलिस्तां

उन्हें फूलों की महक क्या भाये
जिन्हें बारूद से नशा हुआ हो ?
पत्थरों में उलझाने वालों
आखिर गुलशन किसका लूट रहे हो?
है ये गुलिस्तां हमारा-तुम्हारा
क्यों तरसाते हो खुशबू को ?
खुशबू है बिखर जाने दो हवा में
ज़र्द पत्ते क्यों आड़ में लाते हो?
अपनी ही नज़रों में क्यों गिरते हो?
बादलों का पीछा छुड़ाकर देखो
नज़रे उठाकर देखो
हम भी हैं इसी जहां में।
ये जो तारों की बारात है
हमें भी नींद में सपने सजाती है
क्यों जाग रहे हो?
हमारी नींद से घबरा रहे हो?
हम भी हैं, तुम भी हो
इस चमन में कितने गुल खिलें हैं
ऐ मुसाफ़िर क्यों भटक रहे हो ?
खुशबू को तरस रहे हो ?
खुशबू है बिखर जाने दो हवा में
ज़र्द पत्ते क्यों आड़ में लाते हो।

२६. तेरी यादें

शबे-गम तेरी यादों के
दीये जलते हैं
ये नटखट सितारें
बेवजह जलते हैं।
राह-ए-उल्फ़त में मख्मूर हो गये
दूर रहे वाइज़ से
पीते रहे मयकदे से से गो
राह-ए-खुदा के ख़यालात
ज़ेहन में जलते हैं।
मसर्रत रहे,
दिल बाग-बाग हुआ
असीर हुए जल्वा-गर से
उम्मीद के दीये जलते हैं।
चुपके से आ जाओ
बीमार पुरसी के बहाने ही आ जाओ
दीदार के हसीन सपने
खल्वत में जलते हैं।

२७. तेरा साया

तेरे साये से हम यूं निकल गये
आसमां ने रंग बदला
तो यूं निकल गये ।
देखा तो सूरज वहीं पर था
फिर किस के हालात बदल गये?
मैं डूब गयी थी दरिया में
और तुम सफ़ीना से निकल गये ।
बहुत जलाया था धूप ने
तो यूं जल गये
के धुआँ बनकर
आसमां की ओर निकल गये ।
तुम्हें डूबकी लगाना आता हो या न हो
इस इश्क की दरिया से
हम ही निकल गये।

२८. सूना आसमां

ये रात चुप है
खामोश मौसम
घने अंधेरे में
सूनी यादों की सरगम ।
दूर कहीं एक साया सा
आता है नज़र
पिघल जैसे जाता है
मन के छूने पर ।
बरसात के मोती
झरनें लगें जमीं पर
गीलापन ही मिला
बटोरने पर ।
चुपकी सी छा गयी
अंदर-अंदर
फिर वही खालीपन
सूने आसमां पर।

२९. रातों के साये

कितने कोमल लगते हैं
इन अंधेरी रातों के साये
दुख, दर्द और थकान
हैं अपनी आँचल में छुपाये।
हर गाँव, नहर और वीरानों पर
छा जाते हैं अपनेपन से
इसकी कोख में पनपने वाले
हर राज़ छुपाये उजालों से।
कैसे-कैसे खयालात
लेते हैं अंगड़ाइयाँ इसकी गोद में
छेड़ता है कोई गज़ल
इसकी दर्दभरी सन्नाटों में।
के इस रातों के देवता से
कोई नफरत भी क्यों करे?
अगर ये ना कुछ सहता
तो उजालों की परवाह कौन करे?
के जब-जब भी मैंने
रोशनी को तलाशा
अंधेरी रातों ने साथ निभाया।
और जब भी
उजाले करीब हुए
मैं इन्हीं अंधेरी रातों में समाता गया।

३०. जलकण की दास्तां

के मैं जलकण हूँ
इस जीवन धारा की
बहती आयी है जो सदियों से
कहाँ जा रहा हूँ, क्यों जा रहा हूँ ?
बेखबर सभी बातों से।
कितना कुछ सहा है इसने
देकर कुर्बानियाँ राहों में
के मैं भी शरीक हूँ
इसकी जंग की इतिहास में।
फिर भी घबराता हूँ
इसकी तेज रफ़्तार से
और तड़पता हूँ किनारा पाने को।
के मुझे ये ख़बर है
हो जाऊँ ज़ाईल धूप में
बेहतर है अगर
बहता ही रहूँ इसी जलराशी में ।
जो ना कभी रूकी है
सोचने और समझने को
बहती ही जा रही है
अनजान समंदर से मिलने को।
फिर भी पाता हूँ
अकेला इसी भीड़ में
ढूँढता रहा हूँ खुद को
डूबकर इसकी लहरों में।
के मैं तड़पता हूँ
कहीं ये गुमराह तो हो गयी नहीं ?

शंकित हो उठता हूँ
कहीं इसे मंज़िल की पहचान ना रही ?
के मैं थक गया बहुत हूँ
और रुकने का ठिकाना है नहीं
मेरी पुकार
इसकी गूँज में गुम होती रही।
अब बस मालिक से ये दुआ अर्ज़ है
तेरी दया रहे
यह जीवन धारा जो बहती आयी है
बहती ही रहे, बहती ही रहे।

३१. मेरी कहानी

अचानक एक खयाल मन में आया
मैं कौन हूँ?
इधर-उधर नज़रे घुमाकर देखा
बड़ा अचरज हुआ।
मैं तो वो ही औरत हूँ
यहाँ-वहाँ हर जगहा
मेरी ही कहानी दोहराती है
यहाँ-वहाँ हर जगहा।
हर फिज़ा में वही रंग है
हर शहर में वही कहानी
हमदर्दी की उम्मीद कैसी
छा गई है अजीब उदासी।
मेरा वजूद एक खिलौना
दिल बहलाना और टूट जाना।

३२. घूँघटवाली

तुम गोरी हो या काली हो
ऐ घूँघटवाली
मुखड़ा क्यों छिपा रही हो?
क्या ये हया है?
या अनोखी अदा है?
शायद कोई मलाल है
या कोई और गुरूर है?
किनसे आँख चुराती हो
या खुद ही से डरती हो
चल रही हो आम राहों पर
तो पहचान लो अपना सफर
बुराई से बचना चाहो
तो वजूद अपना बुलंद कर दो।

३३. कठपुतली

भगवान की पूजा करो
दादी माँ ने पढ़ाया
पति की सेवा करो
माँ ने सिखाया
रस्मों-रिवाजों का पालन करो
रिश्तेदारों ने बताया ।
पहले तो मैं प्रभावित हुई
फिर कुछ मायूसी बढ़ी
और अब तो आदत सी बन गयी।
मेरी राहें थम गईं
समय की घड़ियाँ बीत गईं
मैं कठपुतली बनकर रह गयी।
बचपन की तालीम रंग लाई
मैं अपने आपसे जुदा हुई।
कितने सावन आये-गये
आसमां ने क्या-क्या रंग खिलायें
फिर भी मेरे उपवन में
कोई फूल खिलें नहीं।
अपने आपसे जुदा होकर
जिंदगी ना जाने
कहीं पर गुम हुई।

३४. पतिव्रता

किसी ने सच कहा है
ये दुनिया एक रंगभूमि है
और हम सब किरदार हैं।
मगर हमारी अदाकारी में
इतनी सच्चाई होती नहीं है
जितना पतिव्रता की भूमिका में
आत्मसमर्पण होता है।
वाकई, कथा बीज
कितना संगीन होता है
उसके चरित्र पर संदेह होता है ।
उसे सिद्ध करना होता है
कि वह पवित्र है
और कई कठिनाइयों से
गुज़रना पड़ता है।
देव और दानव
उसको प्रताड़ित करते हैं
समाज भी उसके चरित्र पर
उँगली उठाता है।
उसका चरित्र हनन करने का
हर एक प्रयास होता है
अपना पातिव्रत्य सिद्ध करने
वह हर एक परीक्षा देती है।
फिर वो भी दौर आता है
संदेह हद से गुज़रता है
अग्निदिव्य ही एकमात्र
रामबाण उपाय रहता है।

पतिव्रता अब चरित्र की
देवता बनकर उभरती है
एक मासूम जिंदगी
चरित्र के नाम पर फ़ना होती है।
परदा गिरता है
आँखों की नमी में पाप बह जाता है।
कितनी संवेदनशील थी ये भूमिका !
मानो वह इसी के लिए जन्मी थी
मगर पुरस्कार किसको मिलता है?
उसके पति को !
हां, सच है
पति सम्मान का हकदार होता है
समाज में उसका स्थान ऊँचा होता है
अग्निदिव्य के ज्वाला से निकला
श्वेत वस्त्र वह पहनता है।
तालियों के गूँज में
पतिव्रता की जय-जयकार होती है
और परदे के पीछे से दबे स्वर में
दर्दभरी सिसकियाँ सुनाई देती हैं।

३५. गंगा मैया

पाप की सूरत देखना चाहो
तो गंगा में डूबकी लगाओ
सत-जणों के अनगिनत पाप
इसकी गहराई में सोये पाओ।
ये कैसा अनर्थ हुआ
जीवन कार्य विफल हुआ
निकल पड़ी थी प्यास बुझाने
आन पड़ा है पाप धोने।
अब लौट जाना भी मुश्किल है
अपने पिता की जो सौगंध है
ये जलधारा जिसने
प्यास बुझाने लायी है।
कितनी आहत है ये मैया
कितनी सहमी-सहमी है
सत-जणों का नाम सुनकर
इसकी लहरें थर्राती हैं।
अगर भगीरथ आ भी जाएं
तो वे आपे से बाहर हो जाएं
अपनी पुत्री की हालत देखकर
पापियों को वो लताड़ लगाएं।

आखिर कब तक ये स्वाँग चलेगा?
पाप-पुण्य का खेल चलेगा?
सच्ची राह पर चल पड़े तो
पाप कभी ना छू पायेगा।

३६. काश ! मैं पेड़ होती

पेड़ जब बारिश में
खुश होकर भींगते हैं
और कलियाँ ख्वाबों में
हल्के से मुस्कुराती हैं
तब मुझे अपने आप पर
तरस बहुत आता है।
वाकई, ये पेड़ कितने बलशाली
और आशावादी होते हैं ।
पतझड़ का सामना करते हैं
तपिश में भी जलते है
और बारिश में भींगकर
फिर एक बार खिलते हैं।
काश ! मैं पेड़ होती
तो गुज़रे हुए मौसम से
आहत न होती
और फिर एक बार
सावन का इंतज़ार करती।

३७. कनवास

आपने मुझे मेरे सपनों के रंग
चुनने को कहा
और देखो मैंने कैसी
रंगों की महफ़िल सजाई है
अपने कनवास पर ।
फिर आप कहने लगे कि
मेरे रंग उदास हैं
मेरा ब्रश भी कुछ खराब है ।
मैं कनवास तो बदल नहीं सकती
मगर कोई ऐसी जगह ढूंढ लूँगी
जहां कोई रंग नहीं है ।
उम्मीद है ऐसी कोई जगह होगी
जहाँ मैं अपने बचे हुए
रंगों की शान बढ़ाऊँ
मेरा ब्रश इतना भी खराब नहीं
और मेरे रंग भी अभी सूखे नहीं।

३८. मोम जल रही है

कहीं पर कोने में
एक मोम जल रही है
लेकिन मेरे घर का अंधेरा
और घना हो जाता है।
मुझे जलन होती है उनसे
जिनकी बाहों में सूरज है
मेरे लिए तो दियासलाई
सदियाँ गवाही देते हैं।
रोशनी की तलाश में
जाऊँ तो आखिर किस दिशा में ?
इल्म की कोई किताब
मेरे लिए लिखी नहीं है
सदियाँ गवाही देते हैं।
फिर भी एक कोने में
मोम यूं ही जल रही है।

३९. मेरी हस्ती

जिसकी कोई मंज़िल नहीं
वही एक सितारा हूँ
जिसका कोई मतलब नहीं
ऐसी एक दास्तां हूँ ।
जहां कोई सपना नहीं
ऐसी डगर पर पहुँची हूँ
जागकर भी देख सकूँ ना
ऐसी नींद सोयी हूँ ।
समंदर को किनारे से
टकराते देखती हूँ
रोशनी को अंधेरे से
जूझता देखती हूँ ।
कभी-कभी
अपनी हस्ती के बारे में सोचती हूँ
जैसे मैं सब कुछ हूँ
लेकिन कुछ भी नहीं हूँ।

४०. आखिर क्यों

एक ऐसा अनोखा दर्द
दिल में यूं लहराता है
लाख जतन कर मनवा ये
फिर भी क्यों टूट जाता है?
दिल की मायूसी हटते-हटते
फिर एक दिन बढ़ जाती है
जो भी चैन मिला अब तक वो
क्यों मिट्टी मिल जाता है?
आँसू जो बहाने थे
वो लाख बहाये हमने
फिर भी आँख क्यों भर आती है?
सारे बंधन तोड़कर भी
हम क्यों बंदिश में खोते हैं?
लाखों हैं सवाल
जो ना कभी सुलझे हैं
फिर भी सवाल क्यों आते हैं?

४१. गम

खुशियों की तलाश में भटकते
वो मेरे पास आए
हाय कमबख्त !
तूने विराने ही ढूँढ निकाले ।
ऐ गम तुम हमें
कैसे भूल सकते हो?
इतना पुराना दोस्ताना हमारा
भला कैसे भूल सकते हो?
आ मेरे पहलू में
मैं तुम्हें पनाह दूँ
कोई जो होगा हमसफ़र
तो आसान बनेगा ये सफर।

४२. मेरी रात

हर सुबह सुहानी थी
हर शाम रूमानी थी
दिन बड़े सुहाने थे
रातें सिमट-सिमट कर सोती थी
और ख्वाबों में वो रंगरलियाँ
झूठे वादे करती थी ।
फिर वो भी एक मौसम आया
काली घटायें घिर-घिर आयी
आसमां के चित्र फलक से
सारी रंगत धो डाली।
सुबह की लालिमा
और शाम की अदाकारी
कहीं नज़र नहीं आ रही थी
उन्हीं की तलाश में मेरी आंखें
आसमां को तांक रही थी।
कितना अजब नज़ारा था
बिजलियाँ आरती उतार रही थी
पेड़ झुक-झुक कर गाते थे
चाँद धीरे से मुस्कुरा रहा था
और चाँदनी की लहरों पर
रात की कालीमा थिरक रही थी।
इतनी सुंदरता तो मैंने
पहले कभी नहीं देखी थी ।
सुबह की मासूमियत
और शाम की रंगिनियाँ
शायद यहीं आकर ठहरी थी
जिनका पीछा करते-करते
मेरी रात चमक गई थी।

४३. जुगुनू

इतिहास के पन्नों में मुझे
आज की कहानी दिखती है
बहुत बदला हमारा नज़रिया
मगर जंग का जुनून बरकरार है।
ऐ खुदा तेरे बज़्म में
कितने सितारें रोशन हैं
फिर ये बारूद के जुगुनू
किस मकसद से दमक रहे हैं?
धुआँ-धुआँ हर कोने में
नज़र कुछ भी आता नहीं है
कितनी दीवारें गिर गयी
कितने शहर उजाड़ गये
अफसोस !
इन्हें कोई रोकता नहीं है।
ये नस्ल का गुरूर
ये बारूद का जुनून
किस हद तक गिर गया है
आखिर ये कैसा इंतकाम है?
ऐ खुदा तेरी दरबार में
हर रंज का इलाज है
लिखवा दे कोई ऐसी किताब
जो सही राह की तालिम दे।
आखिर किताबें ही हमें
इल्म की रोशनी देते हैं
इनके सहारे ही आज तक का
लंबा सफर तय हुआ है।

मगर इन जुगनुओं को रोकने
कोई किताब बनी नहीं है
ना ही कोई अदालत है
ना ही मसीहा आया है।
हमारी अदालतों की
ये कैसी विडंबना है?
आम आदमी को फाँसी
और तख्तपोश को शाबाशी !
ऐ खुदा ये पावन धरती
तेरी ही तो अमानत है
इसे कलंकित करने वाले
सही पथ से भटक गये हैं।
ऐ खुदा विनती सुन ले
तेरा सूरज और रोशन कर दे
उसकी तपिश में जलाकर
इन जुगनुओं का फन भस्म कर दे।

४४. महफ़िल

तेरी महफ़िल में आना था
हम आ गये
अब क्या अंजाम होगा
कौन जाने?
बाहर हरियाली फ़ैली हुई है
अन्दर रंगरलियाँ जमीं हुई हैं
कितनी हैं भीड़ यहां पर
तुझसे मुलाक़ात करने का
मौका कहाँ मिलता है ?
धीरे-धीरे अब नशा छाने लगा है
रंगरलियों में हम खोने लगे हैं
कितने ही पहचान कराने के
मौसम आये
मगर खुद से ही
अजनबी हो गये हैं हम ।
रात ख़त्म होने को है
अलविदा लेने का समय आया है
तेरी चौखट पे हम खड़े हैं
कुछ मायूस होकर
के कुछ भी ना दे सके तुझे
सौगात में।
फिर भी एक अर्ज़ है
टूटे दिल का दर्द है
रुसवाई होकर जाये मगर
मेरी यादों से तू ना हो बेखबर ।

कभी-कभार फुर्सतों में
ऐ ज़िंदगी
हमें भी याद कर लेना
अगर हो सके
तो ये खेल हवा कर देना।